## चतुर्थ अध्याय

## 'मनुष्य के रूप' उपन्यास का देशकाल-वातावरण ।

## चतुर्थ अध्याय

### ' मनुष्य के रूप ' उपन्यास का देशकाल वातावरण --

### देशकाल वातावरण --

" व्यक्ति तथा समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं। व्यक्ति के जन्म की कहानी दो व्यक्तियों की सामाजिक सहयोग की कहानी है। जन्म से ही व्यक्ति पराश्रित है, उसे बरसों सामाजिक आश्रय की आवश्यकता पड़ती है। स्वत: सामर्थ्यवान होने के बाद भी उसे अपनी शक्ति, सौन्दर्य एवं क्रियाशीलता की सराहना के लिए समाज की आवश्यकता होती है।"[१]

मनुष्य के लिए समाज की अनिवार्यता अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक है। मनुष्य अपनी भावनाओं को उद्दीप्त एवं प्रेरित करता रहता है और स्वयं भी उसकी प्रतिक्रियाओं को ग्रहण करता चलता है। इसी प्रकार समाज और व्यक्ति में आदान-प्रदान होता रहता है और वातावरण किसी भी व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत करता है। मनुष्य जन्मगत कुछ होकर पैदा नहीं होता तो वातावरण और परिस्थिति उसे बनाती और बिगाड़ती है। अनुवंशिकता उसे अपने आगोश में सिमट कर उसकी सीमा भले ही निर्धारित कर दे लेकिन उसकी क्षमताओं और कुशलताओं का विकास पर्यावरण पर ही निर्भर रहता है।

" यशपाल वातावरण को व्यक्ति के निर्माण का प्रमुख तत्व मानते है।"[२]

व्यक्ति की समस्त अभिवृत्तियाँ क्रियाएँ समाज की देन है क्योंकि, मनुष्य

१ डा. मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - पृ. ११०।
२ वही पृ. ११३ ।

एक सामाजिक प्राणी है । सामाजिक चेतना से भिन्न उसका कोई अस्तित्व नहीं । मनुष्य को समाज में रहते हुअे हर पल समाज के दायरे में रहना पडता है क्योंकि, कोई व्यक्ति यह कदापि नहीं चाहता कि समाज उसकी उपेक्षा करे । "परिस्थितियों के सम-विषम चक्रों में उलझाते गिरते,उठते चढते, मानव की जीवनस्पर्शी कथा है । ' मनुष्य के रूप '

" जैसे मनुष्य की आंतरिक वृत्तियों का कोई अस्तित्व ही न हो, वह केवल परिस्थितियों रूपी खिलाडी के पैरों की ठोकरें हो ।" [१]

यशपाल के पात्र मध्य वर्ग से सम्बन्ध रखते हुअे पूर्णत: क्रियाशील है । वे वातावरण से प्रभावित होते है,उनको मोडते हैं,संघर्ष करते हैं । यहाँ तक कि उसके निर्माण के लिए अपने प्राण दे देते हैं । वह यह मानते हैं कि मनुष्य के विकास में सामाजिक तथा आर्थिक तत्वोंका महत्वपूर्ण स्थान है । यशपाल के पात्र समाज के विकास तथा उन्नति के लिए ही क्रियाशील दृष्टिगत होते हैं । वे अंदोलन करते हैं । जेल जाते हैं,पुलिस की यातनाएँ सहते है, किन्तु अपने उद्देश की ओर बढते हुअे कदम पीछे नहीं हटाते । व्यक्तिगत सुखात्मक और दु:खात्मक अनुभूति के लिए लडनेवाले भी उनमें कम नहीं है ।

' मनुष्य के रूप ' उपन्यास में भी सोमा के व्दारा धनसिंह को अपनी कहानी सुनाने के मूल में ससुराल से पायी उसकी दु:खानुभूति ही कार्य कर रही है । धनसिंह से सहानुभूति का सहारा पाकर उसके दु:खी हृदय का बाँध टूट जाता है । वह अपना दुखडा रोने लगती है ' तुम जानते हो बेटी का क्या भरोसा ? वह तो है ही पराये घर की । .... मुझे बेचता न तो करता क्या ?' [२]

इसीसे ' सोमा ' के जीवन की दर्दभरी कहानी दृष्टिगत होती है ।

---

१ डॉ.मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - पृ.२६३ ।

२ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१० ।

यशपाल जी यह मानते हैं कि,मनुष्य के विकास में सामाजिक तथा आर्थिक तत्वोंका महत्वपूर्ण स्थान है। 'मनुष्य के रूप' उपन्यास की रचना उसी दृष्टिकोण के प्रतिपादन के लक्ष्य को लेकर हुओ है। परिवर्तन संसार का नियम है, जो आज है वह कल ना रहेगा, जो कल है वह आगे ना रहेगा।

वातावरण किसी भी व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित करता है। वातावरण व्यक्ति को साधु भी बना सकता है और डाकू भी। बालक स्वयं कुछ होकर पैदा नहीं होता है,समाज का वातावरण ही उसका निर्माण करता है। आरम्भ में मानव शिशु की मनोवृत्ति पूर्णतया आत्मकेन्द्रित रहती है परन्तु ज्यों-ज्यों उसका मानसिक विकास होता जाता है,वह व्यक्ति और वस्तुओं में भेद समझ लेता है। वह अपने और पराये में अन्तर अनुभव करने लगता है। फलस्वरुप वह उन्हीं क्षेत्रों को श्रेष्ठ मानता है,जिनसे उसका सम्बन्ध होता है।

'सोमा' एक अनपढ और गँवार विधवा थी। उसे खुद को मालूम नहीं था कि, परिस्थिति की आड में उसे इतने थपेडे खाने पडेंगे। भविष्य में वह एक अभिनेत्री बन पाएगी। अर्थात परिस्थिति और वातावरण ही मनुष्य को सब कुछ न चाहते हुओ भी करने पर मजबूर करती है क्योंकि किसी मनुष्य में जन्मगत् ये सारे गुण असंभव है।

'मनुष्य के रूप' उपन्यास दार्शनिक धरातल पर भौतिक परिवेश में परिवर्तन के फलस्वरूप चेतना में होनेवाले परिवर्तनों को अंकित करता है। 'भौतिक परिवेश के अन्तर्गत मुख्यत: आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ आती है। आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से जो परिवर्तन व्यक्ति या समाज में होता है, उसका प्रत्यक्ष प्रभाव आन्तरिक चेतना पर और फलत: जीवन मूल्यों के परिवर्तन में दिखाई पडता है। इस प्रकार के परिवर्तन से होनेवाला गुणात्मक परिवर्तन कहा जाता है।' [१]

---

१ डॉ.पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल - पृ.१४३।

'सोमा' के जीवन में उसकी चेतना में और अन्तत: उसके जीवन-मूल्यों में जो भी परिवर्तन दिखायी पड़ता है वह आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण ही है।

गरीबी से घुटती हुअी सोमा विधवा होनेपर भी धनसिंह के साथ भाग जाने में कुछ भी अनुचित नहीं समझती। पर वही सोमा फिल्म जगत् की प्रसिध्द अभिनेत्री हो जाने पर अपने प्रेमी धनसिंह को पहचानती तक नहीं। आर्थिक और सामाजिक उन्नती के चरम शिखर पर पहुँचनेवाली सोमा की चेतना इतनी बदल जाती है कि, उसके लिए पूर्व प्रेमी का कोई मूल्य नहीं रह जाता। उसके बाद 'सुतलीवाला' से प्रेम का नाटक करने में भी उसे कुछ हिचकिचाट नहीं होती। यह सब सोमा के परिस्थितियों की ही देन है।

किसी भी मनुष्य के भावों, विचारों एवं क्रिया कलापों पर उसके चतुर्दिक वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि एक से वातावरण में रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव बहुत मिलता जुलता होता है।

यशपाल जी एक क्रांतिकारी उपन्यासकार थे इसीलिए उनका यह उद्देश्य रहा है कि, उनके पात्र केवल अपने सुख-दु:ख से प्रेरित होकर ही क्रियाशील नहीं होते बल्कि वह समाज के पथप्रदर्शन, मानवता विरोधी रूढियाँ तथा परम्पराओं के लिए भी संघर्ष करने को उत्सुक दिखायी देते हैं।

धनसिंह के माध्यम से लेखक ने समाज में बिना ड्राइविंग लाइसेन्स होते हुअे भी ड्राइवर के रूप में भरती हुअे लोगों के व्यवहार और भ्रष्टाचार पर कुठराघात किया है। समाज में चल रहे ड्राइवरी पेशेपर प्रकाश डाला है। धनसिंह का उसी सडक पर मोटर चलाना, सोमा के साथ पहचान होना एक संयोग ही है। यदि सोमा अत्यन्त कष्ट में ना होती और धनसिंह की सांत्वना उसकी असहाय्यता में एकमात्र अवलम्ब ना होती तो क्या सोमा उससे प्रेम करती ? धनसिंह उसके जीवन का

मौतिक अवलम्बन है।' [१]

यशपाल जी के पात्र जादात्तर मध्यमवर्ग का प्रतिनिधित्व करते दृष्टिगोचर होते हैं। फिर भी उन्होंने जिस किसी वर्ग के व्यक्ति को लिया उसे अपनी कुशल लेखनी के माध्यम से सजीव कर दिया है। मध्यवर्ग के सम्बन्ध में उनकी निम्न पंक्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है -- ' मध्य श्रेणी अनिश्चित स्थिति के लोगों की एक अद्भूत पंचमेल खिचडी है। कुछ लोग मोटरों और शानदार बंगलों का व्यवहार कर नियम से अपने आपको इसी श्रेणी का अंङ्ग बनाते हैं। दूसरे लोग मजदूरों की-सी असहाय स्थिति में रहकर भी केवल सफेद - पोश और शिक्षित होने के बल पर इस श्रेणी का अङ्ग होने का दावा करते हैं। देश की राजनीति और समाज-सुधार की चिन्ता जितनी इस श्रेणीको रहती है,उतनी न तो अपने विस्तृत स्वार्थों की चिन्ता में व्यस्त रहनेवाली ऊँची श्रेणियों को रोटी के टुकडों की चिन्ता से कभी मुक्ति न पानेवाली निम्न श्रेणियों की है।' [२]

लेखक का अपना उपन्यास लिखने के पीछे यह लक्ष्य था कि,वह मानव के परिस्थितिजन्य विविध रूप प्रदर्शित कर सके,क्योंकि जीवन के भरण-पोषण तथा रक्षण में जिसकी स्थिति जितनी अनिश्चित रहती है वह उतना ही परिवर्तित रहता है। वस्तुत: मार्क्सवादी प्रेरणा से लेखक का ध्यान परिवर्तन की कारणीभूत परिस्थितियोंपर अधिक रहा है। ताकि दूषित समाज व्यवस्था के विरुध्द संवेदना जागृत की जा सके। सोमा के पिता ने ब्याह के माध्यम से उसे बेचकर धन कमाया,पति के मर जानेपर ससुरालवाले रोटी देने के लिए एवज में काम लेकर और मार-मार कर हड्डियाँ तोडते रहे पर इससे भी संतोष न हुआ तो दूसरे के हाथ बेचने की तैयारी करने लगे। 'सोमा' ,'धनसिंह' को भला आदमी समझ उसके साथ भागने के लिए और घर छोडने पर राजी हुयी। यह भी परिस्थिति और वातावरण से संलग्न है। प्रेम उसे घर से निकलने में सहाय्यक हुआ 'प्रेम तो जीवन

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.८६।

२ यशपाल - दादा कामरेड पृ.११९।

में सहायक वस्तू है ।'[१] अर्थात 'सोमा' के जीवन में प्रेम सहायक सिध्द हुआ परंतु इसके पीछे सोमा के जीवन की चाह और साहस महत्वपूर्ण है ।

धनसिंह की सुरक्षा के लिए पुलिस को आत्मसमर्पण करते वक्त धनसिंह के बारे में सोमा के दिल में आत्मीयता और प्यार झलकता है ।

लेखक ने समाज की इस विडम्बना पर कड़ा प्रहार करके यह सिध्द किया है कि, व्यक्ति के विकास एवम निर्माण में उसके चारों ओर के पर्यावरण का योगदान रहता है ।

'अनुकुल परिस्थितियाँ जहाँ व्यक्ति को उन्नती के शिखर पर पहुँचा सकती हैं । वहाँ प्रतिकूल वातावरण उसे पतन के गर्त में धकेल सकता है ।'[२]

सोमा के चारित्रिक विकास के व्दारा लेखक ने वातावरण की इसी महत्ता की व्यंजना की है ।

बदलती हुई परिस्थितियाँ व्यक्ति के आदर्शों को भी परिवर्तित कर देती है । उस वक्त सोमा के सामने सबसे बडी समस्या जीवनरक्षा तथा उसके सुविधा--पूर्वक निर्वाह की रहती है । यही कटु सत्य है । साम्यवादी भूषण उसकी स्थिति को स्पष्ट करते हुअे कहता है --'तुम उसे छोड गये थे, तो उसके लिए कोई दूसरा सहारा नहीं था । उन लोगोंने उसे बदनाम करके घर से निकाल दिया था । तुम जानते हो, जवान औरत को सहारा न हो तो दुनिया उसके पीछे पड जाती है । रोटी कपडे की परेशानी..... उसे तुम्हारा कोई समाचार भी तो नहीं मिला । तुमने भी तो कोई चिठ्ठी नहीं लिखी ।'[३] स्पष्टत: मनुष्य बहुत कुछ अपने पर्यावरण की उपज है ।

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.८८ ।

२ डॉ.मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - पृ.१२२ ।

३ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१५४ ।

परिवर्तन सृष्टी का नियम है,समाज में जैसे जैसे परिवर्तन होते है,मनुष्य में भी उसी तरह के बदलाव कम या ज्यादात्तर पाये जाते हैं। कभी कभी यह परिवर्तन मन्द गतीसे होते हैं तो कभी कभी यह परिवर्तन शीघ्र होते हैं। जब कभी जिन्दगी में तनाव या संकट का सामना करना पड़ता है तो मनुष्य के स्वभाव में शीघ्र परिवर्तन होता है।

मनुष्य विचारों और इरादे से साहस बटोर सकता है परन्तु इस उपाय से पेट नहीं भर सकता। पेट का खाली रहना मनुष्य की सबसे बड़ी निर्बलता है, जो उसके साहस और इरादे की उँची दीवार की नींव खिसका देती है।

सामान्यत: व्यक्ति जिस पर्यावरण में अपना जीवन व्यतित करता है, वह उसका इतना अभ्यस्त हो जाता है कि उससे भिन्न स्थिति में अपने को सरलता से समायोजित नहीं कर पाता और उस पर्याप्त स्थिति के बाहर वह खुद को संतुलित नहीं कर पाता।

युध्द भी सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान करता है। युध्द का प्रभाव मानव जीवन की सामाजिक,राजनीतिक, धार्मिक और पारिवारिक सभी पक्षों पर पड़ता है।

यशपाल जी को यह सिध्द करना है कि,अगर देश की सभ्यता, कला और विज्ञान की गौरवगाथा साधना सुरक्षित रखना है तो मनुष्य जाति को युध्द का परित्याग करना पडेगा।

मनुष्य का प्रत्येक व्यवहार उसकी प्रेरणाओं और आवश्यकताओं पर निर्भर होता है। इसके अभाव में व्यक्ति से कोई भी प्रेरणादायक कार्य करना दुर्लभ है, हर व्यक्ति की यही अभिलाषा रहती है कि, समाज में उसे मान मर्यादा और ऊँचा स्तर मिले।

इस उपन्यास का पात्र भूषण भी एक उदार और सुरुचिसम्पन्न चरित्रवाला व्यक्ति है। विचारों से कम्युनिष्ठ, शोषण के विरुध्द संघर्ष के लिए तत्पर, सोमा और धनसिंह की सहाय्यता उसकी सुरुचि का परिचायक है। उसमें उदारता भी पर्याप्त है। फरार धनसिंह लौटने के पश्चात जब सोमा और सुतलीवाला के विवाह का समाचार सुनता है तो क्षुब्ध हो जाता है लेकिन भूषण सोमा के प्रति सहिष्णु व्यवहार का परामर्श देता है। संवेदना जागृत करने के लिए सोमा की विवशता की ओर भी संकेत करता है कि सोमा क्या करती ? मनोरमा के घरवालों ने उसे निकाल दिया तो उसके लिए किसी का आश्रय लेना आवश्यक है। विश्वम्भर मानव के शब्दों में -' लेखक मार्क्सवादी है और इस दृष्टिकोण का प्रभाव उसकी रचना पर भी पड़ा है, यह भूषण के चरित्र-चित्रण से एकदम स्पष्ट है।' [१]

मनुष्य समाज में जन्म लेता है और जन्म के पश्चात, सामाजिक एवम् सांस्कृतिक अवसरों से लाभ उठाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति यह कदापि नहीं चाहता कि समाज उसकी उपेक्षा करे इसीलिए वह यथासंभव परम्पराओं का पालन तीव्रता से करता है। व्यक्ति जब अपनी परम्पराओं के विरुध्द कार्य करता है तो उसमें आत्मग्लानि की भावना उत्पन्न हो जाती है। जिस काम के लिए समाज व्यक्ति को स्वीकृति दे देता है वह फिर चाहे बुरा ही क्यों न हो व्यक्ति उसे निर्द्वन्द्व होकर करता है। इसके विपरित समाज जिस कार्य करने को स्वीकृती उसे नहीं देता है उसे करने में वह हिचकचाता है। मनोरमा की जिन्दगी कुछ इस तरह के वातावरण से गुजरी थी की वह पढी लिखी होते हुए भी सामाजिक रीति रिवाजों, अंध:विश्वासों और रूढीवादी मान्यताओं के विपरीत अपने कर्तव्यपक्ष पर आरूढ रहती है क्योंकि व्यक्ति के विकास में वातावरण का महत्वपूर्ण योग होता है।

---

१ डॉ. सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.९३।

मनोरमा भूषण के सम्पर्क में आने पर वह साम्यवादी दल में काम करने लगती है । इसके साथ ही भूषण और मनोरमा प्यार के संबंध की ओर खिंच चले जाते हैं । जब भूषण अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए खुद को असमर्थ पाता है तो एक सम्पन्न घराने की लड़की के संपर्क में रहना अनुचित समझता है और मनोरमा सुतलीवाला से विवाहबध्द होती है,लेकिन पति के अन्याय से उबकर फिर भूषण के संपर्क में आती है लेकिन अंत तक भूषण को पूर्ण रूप से पाने में असमर्थ रहती है ।

'यशपाल जी की दृष्टि विशेष रूप से मध्यवर्ग के चित्रण में रमी हैं, अत: उनके सभी पात्र मध्यवर्ग के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं यथा (१) उच्च मध्यवर्ग (२) निम्न मध्यवर्ग (३) मध्यवर्ग ।' [१]

यशपाल जी का प्रत्येक पात्र चाहे वह उच्च मध्यवर्ग से सम्बन्धित हो अथवा निम्न मध्यवर्ग से । अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करने में पूर्णतया समर्थ है । 'मनुष्य के रूप' इस उपन्यास में मनोरमा,जगदीश,सुतलीवाला,आदि पात्र उच्च मध्यवर्ग के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं । दूसरा वर्ग निम्न मध्य श्रेणी का है यह वर्ग धन के अभाव में उच्चवर्ग के सम्मुख न तो प्रतिष्ठा का अधिकारी है और न ही इसे अधिकार और सम्मान प्राप्त है । यह वर्ग प्राय: व्यक्तिगत कुण्ठाओं और दमन का शिकार होने के लिए विवश रहता है । धनसिंह ,भूषण,सोमा इसी वर्ग के पात्र है ।

यशपाल जी यह मानते है कि मनुष्य के विकास में सामाजिक तथा आर्थिक तत्वोंका महत्वपूर्ण स्थान है । 'मनुष्य के रूप' उपन्यास की रचना इसी दृष्टिकोण के प्रतिपादन के लक्ष्य को लेकर हुआ है, 'जो परिस्थितियों के अनुसार मनुष्य की चेतना तथा विचारधारा में परिवर्तन तथा तदनुकुल उसके रूपान्तरित हो जाने में विश्वास रखता है ।' [२]

---

१ डॉ.सरोज गुप्त – यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व – पृ.१२६ ।

२ डॉ.मधु जैन – यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण – पृ.१२१ ।

यशपाल जी को आधुनिकायेँ भी अद्यान्त क्रियाशील रहती है । उनका प्रत्येक कार्य समाज को चुनौती देनेवाला होता है । आत्मनिर्भरता उनके व्यक्तित्व का गुण है । समाज को चुनौती देती हुई ये नारीयाँ अपने मार्ग पर दृढ रहती हैं ।

प्रत्येक सम्प्रदाय और समूह की नैतिक मान्यतायें अलग-अलग होती हैं । इस उपन्यास में धनसिंह से एक दुर्घटना में लॉरी टूट गयी । ड्राइवर मालिक का कहना है कि यह दुर्घटना लापरवाही के कारण हुवी है । अत: धनसिंह को अपने वेतन में से इसके दाम देने चाहिये । ड्राइवरों की यूनियन इस प्रस्ताव का विरोध करती है । उनकी मान्यता है कि "कम्पनी साली तो हमारी कमाई खाती है । माँ के खसम मालिक तो लगाइयों को लेकर बिस्तर में पडे रहते हैं । जान हथेली पर रखे बरसात में सिसकते पहाडों पर से आदमियों को हमी ढोते हैं । साले, यह तेरी और मेरी ही कमाई है । ... धनसिंह की तनख्वाह कोई नहीं काट सकता है । धनसिंह की तनख्वाह कटेगी तो हड़ताल हो जायेगी , लाइन,पर एक गाडी नहीं चलेगी ।"[१]

धनसिंह अपने दो साथियों की हत्या कर देता है किन्तु पुलिस के व्दारा पकडे जाने की कल्पना कर सिहर उठता है' निश्चय ही अब उसे फाँसी दे दी जायेगी । वह आत्मरक्षा के हेतु भाग खडा होता है । उसकी जीवनरक्षा वृत्ति इतनी प्रबल होती है कि, राह में चलते उसे किसी बातका भान ही नहीं रहता । पुलिस से बचने के लिए भागता जाता है । धनसिंह की इस मन:स्थिति का अत्यंत सजीव वर्णन किया है ।

'समुद्रतल से सात हजार फूट उँची,बादलों में छिपी रहनेवाली धर्मशाला की बस्ती से धनसिंह अँधेरी रात में पगडण्डियों की राह इस तेजी से चला जा रहा था जैसे पहाड भी ढलान से उखड कर लुढकता जानेवाला कोई पत्थर हो जिसे राह देखने पहचानने की कोई आवश्यकता न थी । वह आन्तरिक प्रेरणा से स्वयं ही निशचित राह से निशचित स्थान की ओर चला जा रहा था ।'[२] याने धनसिंह

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.४९ ।

२ वही पृ.१२१ ।

परिस्थितिका शिकार हो जाता है। उसकी ऐसा करने के पीछे कोई इच्छा नहीं थी।

यशपाल जी के उपन्यासों का यह लक्ष्य रहा है कि, जीवन एक संघर्ष है और व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह प्रत्येक परिस्थितिका डटकर साहस के साथ सामना करें। दूसरे शब्दों में उनका समस्त उपन्यास साहित्य संघर्ष मूलक साहित्य है।

वातावरण मनुष्य के मानसिक व्यक्तित्व का ही नहीं शारीरिक व्यक्तित्व को भी विशिष्टता प्रधान करता है। मनुष्य का संबंध पर्यावरण से है। ' कभी कभी पर्यावरण के अनुसार वह अपने में परिवर्तन कर लेता है।' [१]

यशपाल जी के समस्त उपन्यास इस बात के साक्षी है कि देशकाल और वातावरण के चित्रण में उन्हें पूर्ण सफलता मिली है।

उसी तरह ' देशकाल और वातावरण से संबंधित रीति-रिवाज, रहन - सहन, खान-पान, वेशभूषा, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समस्त परिस्थितियों का वर्णन करने में यशपाल जी को सफलता मिली है।' [२]

---

१ डॉ. मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - पृ. ३३५।

२ प्रो. प्रवीण नायक - यशपाल का औपन्यासिक शिल्प - पृ. १४६।

## निष्कर्ष --

लेखक का लक्ष्य यही था कि वह मानव के परिस्थितिजन्य विविध रूप प्रदर्शित कर सके,क्योंकि जीवन के भरण-पोषण तथा रक्षण में जिसकी स्थिति जितनी अनिश्चित रहती है वह उतना ही परिवर्तित होता रहता है। वस्तुत: मार्क्सवादी प्रेरणा से लेखक का ध्यान परिवर्तन के कारणभूत परिस्थितियों पर अधिक रहा है। ताकि दूषित समाज व्यवस्था के विरुध्द संवेदना जागृत की जा सके। इस उपन्यास में सोमा सदैव शरण पाने का मूल्य चुकाती रहती है। सोमा की इस जीवनगाथा व्दारा लेखक ने यह प्रकट किया है कि सामान्य भारतीय नारी अपनी परात्म निर्भरता में किसी न किसी का आश्रय खोजती है। या तो वह पत्नी बनकर रह सकती है या वेश्या बनकर। लेखक ने समाज की इस विडम्बना पर कड़ा प्रहार करके यह सिध्द कर दिया है कि व्यक्ति के विकास एवम् निर्माण में उसके चारों ओर का पर्यावरण महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत करता है। अनुकूल परिस्थितियाँ जहाँ व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकता है वहाँ प्रतिकूल वातावरण उसे पतन के गर्त में ढकेल सकता है। सोमा के चारित्रिक विकास के व्दारा लेखक ने वातावरण की इस महत्ता की व्यंजना की है।

' परिस्थितियों के सम-विषम चक्रों में उलझते गिरते,उठते,चढते मानव की जीवन,मर्मस्पर्शी कथा है। जैसे मनुष्य की आन्तरिक वृत्तियों का कोई अस्तित्व ही न हो,वह केवल परिस्थितियों रूपी खिलाडी के पैरो की ठोंकरें हो।' [१]

पर्यावरण व्यक्ति का ही नहीं राष्ट्र और देश का भी भाग्य निर्माता होता है। इसीतरह आर्थिक स्थितियाँ एवं कारण भी व्यक्ति के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

---

१ डॉ.मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - पृ.२६३।

यशपाल के हर उपन्यास में उन्होंने यह विश्वास के साथ सिध्द किया है कि, मनुष्य अपने आप में कुछ नहीं है जो कुछ है समाज की देन है।

इस प्रकार यशपाल जी ने प्रस्तुत उपन्यास में देश काल वातावरण का पूरी सफलता से निर्वाह करने की कोशिश की है।